

## INDEX

आर्थिक विकास का अर्थ और मापक  
अल्प विकसित देशों की विशेषताएँ  
मानव विकास सूचकांक  
भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में विदेशी पूंजी की भूमिका को रेखांकित करें।  
सतत विकास (Sustainable Development)  
आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय सततता  
हरित सकल घरेलू उत्पाद (Green GDP) की अवधारणा  
भारत में सतत विकास : रणनीति और नीतियाँ  
समावेशी वृद्धि की अवधारणा  
समावेशी विकास व 11वीं पंचवर्षीय योजना  
गरीबी: मापन और रुझान  
बेरोजगारी : मापन और रुझान  
मानव गरीबी सूचकांक HPI तथा बहुआयामी गरीबी सूचकांक MPI  
भारत में गरीबी मापन  
खाद्य और पोषण सुरक्षा: भारत में खाद्यान्न उत्पादन और उपभोग की प्रवृत्ति  
खाद्य सुरक्षा की समस्या: भण्डारण की समस्या और मुद्दे  
सार्वजनिक वितरण प्रणाली  
एकीकृत बाल विकास सेवाएँ  
मध्याह्न भोजन  
खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए सरकार की प्रमुख नीतियाँ और कार्यक्रम  
राष्ट्रीय विकास परिषद् (NDC)  
योजना आयोग (Planning Commission)  
केन्द्रीकृत एवं विकेन्द्रीकृत नियोजन

## आर्थिक विकास का अर्थ और मापक

आर्थिक विकास (Economic Development) समकालीन अर्थशास्त्र और नीति निर्माण का केंद्रीय विषय है। प्रारंभ में, इसे केवल **आर्थिक वृद्धि (Economic Growth)** के समान माना जाता था—यानी सकल घरेलू उत्पाद (GDP) या राष्ट्रीय आय में वृद्धि। हालाँकि, अनुभव ने सिद्ध किया है कि आय में वृद्धि स्वतः ही मानव कल्याण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित नहीं करती है।

आर्थिक विकास की अवधारणा समय के साथ विकसित हुई है, और अब इसे एक **बहुआयामी (Multidimensional)** प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। यह केवल "देश कितना अमीर है" इसका मापन नहीं है, बल्कि "देश के लोग कितने बेहतर जीवन जी रहे हैं" इसका गुणात्मक आकलन है।

### II. आर्थिक विकास की संकल्पनात्मक स्पष्टता

#### A. परिभाषा

आर्थिक विकास एक व्यापक और जटिल प्रक्रिया है जिसमें न केवल प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि शामिल है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता, सामाजिक संरचनाओं, तकनीकी क्षमताओं और संस्थागत ढाँचे में सकारात्मक और टिकाऊ (Sustainable) परिवर्तन भी शामिल हैं।

**नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन (Amartya Sen)** के अनुसार, विकास को "**क्षमताओं के विस्तार (Expansion of Capabilities)**" के रूप में देखा जाना चाहिए। इसका अर्थ है कि लोगों को वह जीवन जीने की स्वतंत्रता और अवसर होने चाहिए जिसे वे महत्व देते हैं।

#### B. आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास में अंतर

आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास दो अलग-अलग अवधारणाएँ हैं जो परस्पर संबंधित होने के बावजूद एक-दूसरे का पर्याय नहीं हैं।

मापदंड	आर्थिक वृद्धि (Economic Growth)	आर्थिक विकास (Economic Development)
प्रकृति	मात्रात्मक (Quantitative)	गुणात्मक (Qualitative)
केंद्र	राष्ट्रीय आय/जीडीपी की वृद्धि	मानव कल्याण और जीवन स्तर में सुधार
क्षेत्र	एकल-आयामी (आय में वृद्धि)	बहुआयामी (आय, स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता)
उदाहरण	प्रति व्यक्ति आय में 10% की वृद्धि।	शिशु मृत्यु दर में कमी, साक्षरता दर में वृद्धि।
आवश्यकता	विकास के लिए <i>आवश्यक शर्त</i> है।	वृद्धि के लिए <i>पर्याप्त शर्त</i> नहीं है।

**निष्कर्ष:** आर्थिक वृद्धि विकास का एक साधन है, लक्ष्य नहीं। उच्च आर्थिक वृद्धि के बावजूद किसी देश में असमानता, प्रदूषण और शिक्षा का निम्न स्तर हो सकता है, जिससे विकास बाधित होता है।

### III. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विकास के मापन का विचार पिछली शताब्दी में क्रमिक रूप से विकसित हुआ:

1. **आय-केंद्रित दृष्टिकोण (1950-1970):** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, विकासशील देशों का मुख्य लक्ष्य तीव्र औद्योगीकरण था। इस युग में, सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) और प्रति व्यक्ति आय को विकास का एकमात्र मानक माना गया।
2. **कल्याणकारी दृष्टिकोण (1970 का दशक):** यह महसूस किया गया कि उच्च जीडीपी के बावजूद गरीबी और असमानता बनी हुई है (जिसे "ट्रिकल-डाउन सिद्धांत की विफलता" कहा गया)। इसके बाद मूलभूत आवश्यकताओं (Basic Needs) पर ध्यान केंद्रित किया गया।
3. **क्षमता और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण (1990 के बाद):** अर्थशास्त्री महबूब उल हक और अमर्त्य सेन ने यह तर्क दिया कि विकास का अंतिम लक्ष्य मानव क्षमता को बढ़ाना होना चाहिए। इसी सोच ने मानव विकास सूचकांक (HDI) जैसे समग्र मानकों को जन्म दिया।

#### IV. आर्थिक विकास के मानक/मापक

आर्थिक विकास को मापने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानकों को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

##### A. पारंपरिक या आय-आधारित मापक

1. **सकल घरेलू उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद :**
  - **मापन:** ये किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर (GDP) या उसके निवासियों द्वारा (GNP) एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य को मापते हैं।
  - **प्रति व्यक्ति आय :** यह राष्ट्रीय आय को कुल जनसंख्या से विभाजित करके प्राप्त किया जाता है। यह आय का सबसे सरल मापक है और विभिन्न देशों की आर्थिक तुलना के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

##### B. आधुनिक या समग्र मापक

आय-आधारित मापदंडों की सीमाओं को दूर करने के लिए इन मापदंडों का विकास हुआ, जो स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर जैसे गैर-मौद्रिक कारकों को शामिल करते हैं।

1. **मानव विकास सूचकांक (Human Development Index - HDI):**
  - **गठन:** 1990 में महबूब उल हक और अमर्त्य सेन द्वारा विकसित। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा जारी किया जाता है।
  - **आयाम (Dimensions):** HDI विकास को तीन मूलभूत आयामों पर मापता है:

# HDI

## HUMAN DEVELOPMENT INDEX



LIFE EXPECTANCY  
AT BIRTH



AVERAGE EDUCATION  
LEVEL



STANDARD OF LIVING  
(GNP PER CAPITA)

**स्वास्थ्य (Health):** जन्म के समय जीवन प्रत्याशा।

**शिक्षा (Education):** स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष और स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष।

**जीवन स्तर (Standard of Living):** क्रय शक्ति समता (PPP) पर आधारित प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI)।

### 2. भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक :

- **गठन:** 1970 के दशक में मॉरिस डी. मॉरिस द्वारा विकसित।
- **आयाम:** यह तीन संकेतकों पर केंद्रित है: **साक्षरता दर** , **शिशु मृत्यु दर** , और **जन्म के समय जीवन प्रत्याशा** ।

### 3. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (Multidimensional Poverty Index - MPI):

- **गठन:** UNDP और ऑक्सफोर्ड पॉवर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव (OPHI) द्वारा विकसित।
- **आयाम:** यह गरीबी को केवल आय के आधार पर नहीं, बल्कि 10 संकेतकों के माध्यम से तीन आयामों (स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर) में होने वाली वंचनाओं (Deprivations) के रूप में मापता है। यह गरीबी की तीव्रता और सीमा दोनों को दर्शाता है।

### 4. लिंग असमानता सूचकांक (Gender Inequality Index - GII):

- यह प्रजनन स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और श्रम बाजार में भागीदारी के माध्यम से लैंगिक असमानता को मापता है। उच्च GII मूल्य देश में उच्च लैंगिक असमानता को इंगित करता है।

### 5. वास्तविक प्रगति संकेतक (Genuine Progress Indicator - GPI):

- GPI जीडीपी की सीमाओं को दूर करने का एक प्रयास है। यह जीडीपी में कल्याणकारी तत्वों (जैसे अवैतनिक देखभाल कार्य, स्वैच्छिक कार्य) को जोड़ता है और पर्यावरणीय लागतों (प्रदूषण, संसाधन क्षरण) और सामाजिक लागतों (अपराध) को घटाता है।

## V. विकास के मानकों से जुड़ी चुनौतियाँ

विकास के समग्र मानकों के उदय के बावजूद, उनके मापन और उपयोग में कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं:

1. **गुणात्मक मापन की कठिनाई:** HDI जैसे सूचकांक भी पूरी तरह से गुणात्मक सुधारों (जैसे राजनीतिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार, सांस्कृतिक विकास) को शामिल नहीं कर पाते हैं।
2. **भारण की समस्या (Weighting Issue):** MPI या HDI में विभिन्न आयामों को जो भार (Weight) दिया जाता है, वह अक्सर व्यक्तिपरक होता है और अर्थशास्त्रियों के बीच बहस का विषय रहता है।
3. **डेटा की विश्वसनीयता:** विकासशील देशों में स्वास्थ्य, शिक्षा या गैर-बाजार गतिविधियों से संबंधित डेटा का संग्रह अक्सर अविश्वसनीय या विलंबित होता है, जिससे मापों की सटीकता प्रभावित होती है।
4. **आय मापन की सीमाएँ:** प्रति व्यक्ति आय (PCI) देश के भीतर आय वितरण में मौजूद विशाल असमानता को छिपा देती है।

## VI. निष्कर्ष एवं वर्तमान प्रासंगिकता

आर्थिक विकास की अवधारणा एक मशीन की दक्षता मापने से हटकर एक मानव जीवन की गुणवत्ता मापने तक विकसित हुई है। आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के लिए यह स्पष्ट है कि विकास को अब केवल **सड़क, रेल और कारखानों** से नहीं मापा जाता, बल्कि **स्कूल, अस्पताल और अवसरों** से मापा जाता है।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जहाँ आय असमानता और बहुआयामी गरीबी की समस्या है, HDI और MPI जैसे समग्र मापक नीति निर्माण को अधिक लक्षित और समावेशी बनाते हैं। सरकार की "**सबका साथ, सबका विकास**" की नीति, जिसका उद्देश्य अंतिम व्यक्ति तक विकास के लाभ पहुँचाना है, सही मायने में आर्थिक विकास के आधुनिक बहुआयामी दृष्टिकोण को दर्शाती है।

### अल्प विकसित देशों की विशेषताएँ

अल्प विकसित देश वे होते हैं जहाँ आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी व राजनीतिक संरचनाएँ अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं कर पातीं। इसके परिणामस्वरूप विकास धीमा, असमान और अस्थिर रहता है। इन देशों में निम्नलिखित विशेषताएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं—

#### 1. निम्न आर्थिक संकेतक

**प्रति व्यक्ति आय अत्यंत कम रहती है।** कम आय के कारण लोग न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते। सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का आकार छोटा होने से आर्थिक गतिविधियाँ सीमित रहती हैं।

**पूँजी निर्माण की दर निम्न होती है।** कम आय → कम बचत → कम निवेश, जिसके कारण उद्योग, सड़कें, परिवहन, बैंकिंग और संचार जैसी आधारभूत सुविधाओं का विकास धीमा रहता है।